Charter-3

तृतीय अध्याय

प्रो. सुधीरकुमार सक्सेनाजी का गुजरात में आगमन

३-१ गुजरात की भौगोलिक स्थिति (संगीत क्षेत्र)

३-२ बड़ौदा (वड़ोदरा) राज्य की भौगोलिक स्थिति

३-३ महाराजा सयाजीराव स्थापित गायन शाला एवं बड़ौदा स्थित म्युजिक कॉलेज

३-४ म्युजिक कालेज में नौकरी क्यों पसंद की?

३-५ नियुक्ति के समय तबला विभाग की स्थिति

३-५-१ तबला विभाग में सुधीरजी विद्यार्थीओं को शिक्षा किस प्रकार से देते थे

३-५-२ कॉलेज को अनोखी सिद्धी प्राप्त हुई

३-६ विश्वविद्यालय के विभिन्न विधाओं में रुचि

३-७ प्रो. सुधीरकुमारजी का बड़ोदा शहर में निवास

३-७-१ तबले के अलावा शिष्यो को सचोट मार्गदर्शन

३-८ १९७९ में रीडर एवं प्रोफेसर पर नियुक्ति

३-८-१ १९८३ में नीवृत्ति

३-८-२ फॅकल्टी ऑफ परफॉरमींग आर्टस् में परिवर्तन

तृतीय अध्याय

प्रो सुधीरकुमारजी सकसेनाजी का गुजरात मे आगमन :

पिछले अध्याय में देख चुके है की प्रो सुधीरकुमार सक्सेनाजी २७ वर्ष की अपनी आयु में नौकरी के व्यवसाय के कारण भारत वर्ष में काफ़ी भ्रमण चुके है। जिसक वर्णन हमने पिछले अध्याय में किया है। भारत स्वतंत्र होने के बाद भी सन् १९५० तक मन में किसी एक स्थान पर अपनी नौकरी पक्की कर लेना, मन में ऐसा कोई विचार नहीं था। परंतु मुंबई में आयोजित एक कॉन्फरन्स् में प्रो .सुधीकुमारजी ने ऐसा बहेतरीन तबला बजाया कि श्रोतागण अचंभित रह गये। इसी कॉन्फरन्स् में बड़ोदा स्थित महाराजा सयाजीराव युनिवर्सिटी की वाइसचांसलर श्रीमती हंसाबेन मेहता ने जब सुधीरजी का तबला सुना उसी समय मन में ठान लिया की, क्योंना इस महान कलाकार को मै अपने विश्वविद्यालय में आमंत्रित करुँ साथ,साथ मन की बात सुधीरजी तक पहुंची और सुधीरजी ने भी किसी क्षण का विचार न करते उपकुलपति का निमंत्रण स्वीकार कर लिया, उस समय किसी भी प्रकार की औपचारिकता न रखते सुधीरजी को नियुक्ति पत्र प्राप्त हुआ। गुजरात से कई बार गुजरना होता था लेकिन बड़ौदा जैसी कलानगरी में स्थायी होना यह मन में विचार नहीं था। इस प्रकार सुधीरजी का गुजरात स्थित बड़ौदा जैसी कला नगरी में आगमन हुआ।

भारत वर्ष का गुजरात प्रांत पहले महाराष्ट्र प्रांत के साथ जुडा हुआ था। केवल गुजरात प्रांत पर दृष्टिपात करे तो यह प्रांत दो विभागों में विभाजित किया गया। एक महाराष्ट्र और दूसरा गुजरात इन के विभाजन पर गहन दृष्टिपात करे तो सन १९६० से यह प्रांत गुजरात से पहचाना गया। शोधार्थी का मानना है की गुजरात की एतिहासीक भूमि की भौगोलिक स्थिति क्या थी यह जानना आवश्यक है। शोधार्थी का शोध ग्रंथ लिखते समय और गहन अध्ययन करने के बाद पद्मभूषण प्रो. आर. सी मेहता लिखित पुस्तक "गुजरात अने संगीत" में प्राप्त हुआ। एसे दिग्गज कलाकार के द्वारा प्रकाशित पुस्तक जो गुजराती भाषा में लिखी गयी है उंसीको शोधग्रंथ में संदर्भ पुस्तक के रुप में लिया गया है। तथा इस बात पर संतुष्ट न होते हुए शोधार्थी ने कहीं कहीं पर अपना मत या विचार देने का कष्ट किया है, जिससे जनमानस में गुजरात एक भौगोलिक स्थिति पर विभीन्न दृष्टियों से विचार किया जा सके। नीचे दिया गया लेख यद्यपि गुजराती भाषा में जरुर है लेकिन यदि परीक्षक केवल भाषा के अभाव के कारण समझ न पाये तो परीक्षक के सामने इस लेख पर चर्चा विमर्श करके इसे संतुष्ट किया जायेगा। इस लेख संबधी समस्त जानकारी को समझाने का प्रयास किया जायेगा ।

---

८० साक्षात्कार प्रों सुधिरकुमार सक्सेनाजी दि. १५-२-२००६, २१-२-२००६, १-३-२००६

ગુજરાત ની ભૌગોલીક સ્થિતી :

ગુજરાત નુ નામ ગુજજર રાષ્ટ્ર પરથી પડયુ છે. ગુજજર પ્રજા આક્રમણખોર હુણોની પાછળ પાચમી સદીમા.આવી હતી. ગુજરાત ના ઇતીહાસ ના મુળીયા ઇ.સા.પૂર્વે બે હજાર વર્ષ સુધી પોહચે છે.એક માન્યતા પ્રમાણે ભગવાન શ્રીકૃષ્ણ મથુરા છોડીને સૌરાષ્ટ્ર ના પશ્ચિમ કાઠે દવારકા મા વસ્યા હતા.મૌર્ય,ગુપ્ત પ્રતિહાર વગેરે અનેક શાસકોએ ગુજરાત પર શાસન કર્યું. પરંતુ રાજ્યને પ્રગતીના પંથે લઈ જઇ ને સમૃધ્ધ બનાવાનુ શ્રેય ચાલુકય સોલંકી રાજાઓના ફાળે જાય છે, હુમલાખોર જેવા મહમંદ ગઝની જેવા વચ્ચે પણ ચાલુકય રાજાઓ રાજ્યની સમૃધ્ધિ અને હિત જાળવવા માં સફળ રહયા. સુખશાતીનો દોર પુરો થયા પછી ગુજરાત પર મુસ્લીમો,મરાઠાઓ અને અંગ્રેજો નુ શાસન હતુ.૧

મરાઠા સલ્તન અને અંગ્રેજો ના કાળ માં ગુજરાત માં શાસ્ત્રીય સંગીત નો માહોલ ઉચ્ચકોટી નો હતો. ગુજરાતે ભારતીય સંગીત ને મારુ મારુગુર્જરી,ગુર્જરીતોડી,ખંબાવતી,બીલાલવલ,સોરઠ આવા રાગો આપેલ છે.તેમજ ગુજરાત મા૧૮૮૮મા.સ.ગીતાનુ ભવ ૧૮૯૧ માં બાલ ા છંદો મંજરી, ૧૮૯૩-૯૪માં સ્વરલેખન સહીત નરસિહ મેહતાનુ માંમેરુ તથા ભગવંત ગરબાવલી તથા વડોદરાના ગાયન શાલા માં ચીજોનુ ૧ થી ૬ *ભાગોમાં ક્રમીક* પુસ્તકો પ્રકટ થયા હતા અને એ ગુજરાતી માં અને મરાઠી માં પ્રકાશીત થયા હતા.તેજ પ્રમાણે મૌલાબક્ષ દવારા સિતાર શિક્ષક અને સુલતાન ખાં કૃત તાલ પધ્ધતી ૧૮૮૮ માં પ્રસીધ્ધ થયા હતા. અને સૌ પ્રથમ ગુજરાત માં પ્રકાશીત થયા હતા, એક પારસી કૃત રાગ સ્થાન પોથી ૧૮૬૨ માં પ્રસીધ્ધ થઇ હતી.૧૮૭૦ માં મૌલાબક્ષાખાં એ જૂન મા ગાયનાબ્ધિસેતુ નામનુ સંગીત માસીક શુરુ કરેલુ .

સમગ્ર દેશમાં દેશી રાજ્યોએ આપેલા ફાળાનો વિચાર કરીયે તો વડોદરાને સૌથી મોટુ અને અગત્યનુ સ્થાન વડોદરા રાજ્ય ને આપવુ પડે. ખંડેરાવ મહારાજા ના સમય માં કહેવાય છે કે સેકડોની સંખ્યા માં ગાયકો,વાદકો,નર્તક-નર્તકીઓ,તમાશકારો અને ભજનમંડળીઓ હતી અને ૧૮૮૬ ફેબ્રુઆરી માં સરકારીગાયન શાળા સ્થાપી. કે,સયાજીરાવ ગાયકવાડે હિંદ ભર માં વડોદરાનુ નામ રોશન કર્યું રૈયત માટે સગીત શિક્ષણ ની આવી યોજના આ પહેલા છેલ્લા 300 ૪00 વર્ષ માં અમલ માં મુકાઇ હોય અવુ જાણવા માં નથી. વડોદરા રાજ્ય માં કલાવંત કારખાનુ નામનુ એક અલગ ખાતુ ચાલતુ હતું તે દવારે અનેક પ્રકારના કલાલારો વાર તેહવારે આમ જનતાને લાભ આપતા, નાસર ખાં અને ગંગારામજી જેવા મૃદુગાંચાર્યો, અલીહુસેન અને જમાલુદદીન જેવા બીનકારો, ઇનાયતહુસેન તેમજ ઘસીટ ખાં જેવા સિતારીયા,શહનાઇવાદક ગાયકવાડ જલતરંગ પ્રવીણ ગુલાબસાગર જેવા આ ખાતાને શોભાવતા હતા, તેમજ ભાસ્કરબુવા બખલે નાગુરુ ફૈજમહમદખાં,ગુલામરસુલખાં,ઉ,અલમગીર,તસદહુસેન,ગુલામઅબ્બાસ ખા તેમની

પાસે તૈયાર થયેલા ઉ,ફૈયાઝ ખાં એવા ગાયક રત્નો ની સિધ્ધીઓથી સમગ્ર આજનુ ગુજરાત જરા પણ અભણ નથી. આના પરથી એક વાત તો ચોક્કસ માનવી જોઈયે કે ગુજરાત પણ શાસ્ત્રીય સંગીત માં જરા પણ પાછળ ન હતુ. પરંતુ સંગીત માટે ગુજરાતે ઘણુબધુ ભારતવર્ષ માટે આપેલ છે.

ગુજરાત માં નાના મોટા રાજ રજવાડો માં અનેક નામાંકિત કલાકારો આશ્રીત હતા. તેમાથી વિશેષ સંભારવા જેવા કલાકારો અને રજવાડા.

અનુ ક	રાજ્ય	કલાકાર	કલા વિભાગ
૧	લુણાવાડા	ઉ.અહેમદ ખાં	ગાયક
૨	સંથરામપુર	મોહમદ હુસેન	ગાયક
૩	પાલનપુર	નાસર ખાં,મિશ્રી ખાં	સિતાર વાદક
૪	વાડાશિનોર	મહમદ ખાં	ગાયક
૫	ઇડર	અમીર ખાં	ગાયક,વાદક
૬	દેવગઢબારિયા	ઉમરાવ ખાં	સિતાર
૭	ગોધરા	નથ્થે ખાં	સિતાર
૮	વઢવાણ	ધારપુરે	સિતાર
૯	સૌરાષ્ટ્ર	બન્ને ખાં	ગાયક
૧૦	જામનગર	ઉસ્માનભાઇ,ઉમ્મરભાઇ	ગાયક
૧૧	જુનાગઢ	જેહરબાઇ નિમચવાલી	ગાયીકા
૧૨	માંગરોલ	મંગલુ ખા તબલીયા	ગાયક
૧૩	પાલનપુર	બાઇ કાલી હુસેની	ગાયીકા
૧૪	રાજપીપલા	સમશેર ખાં	ગાયક,વાયોલીન
૧૫	ચુડા	દરબાર શ્રી પોતે	બીન વાદક
૧૬	સાણંદ	દરબાર શ્રી પોતે	ગાયક
૧૭	પાટણ	બાઇલાલબાઇ નાયક	ગાયક
૧૮	વડનગર	રામલાલ નાયક	કથ્થક
૧૯	કચ્છ	લલખાં	કથ્થક

३-२ बड़ौदा (वडोदरा) की भौगोलिक स्थिति :

हाल का वड़ोदरा शहर का उल्लेख प्राचीन ग्रंथो में भी मिलता है। एक जैन ग्रथंकार ने शहर का वर्णन इस प्रकार से किया है कि यह भूमि की तिलक रुप में चित्रीत है। समुद्र से दूर मैदान के मध्य बसा हुआ है और गुजरात प्रांत के राज मार्गो को जोडने का एक सेतु का कार्य करता है। वड़ोदरा शहर का इतिहास और सांस्कृकि धरोहर लगभग दो हजार साल पुराना है ऐसा जैन साहित्य और कुछ पुराने शिलालेख पर आधारित है। इसका प्राचीन नाम वटपद्र या वटोदरा था। १२९७ तक यहाँ हिन्दुओं का आधिपत्य रहा था तथा गुप्त वंश का शासन था। गुप्त वंश तथा चालुक्य वंश के बीच में भीषण युध्द में चालुक्य राजा की जीत हुई। अंत मे यहाँ सोलंकी वंश द्वारा कब्जा किया गया। इसके बाद मुस्लीमो शासको का शासन रहा,इसकी बागडोर दिल्ली के शासको के हाथ में थी। यहाँ बाबी सरदार का आधीपत्य था। इसके जुल्म के आगे प्रजा त्राहिमाम हो गयी थी। इस जुल्म को समाप्त करने के लिये मराठा सल्तन के पेशवा ने अपने दो सरदारो को भेज कर मुस्लिमों के साथ युध्द कर उनको हराया और वापिस हिन्दु शासन शुरु किया,साथ ही मराठा राज्य शुरु हुआ। यह समय १७३२ था। मराठा शासन में पेशवा की और से राजस्व एकत्रित करने के लिये काम

सोंपा गया और पूरे गुजरात में इसका अमल शुरु हुआ। और मराठा शक्तिशाली शासक बन गये, परन्तु पानीपत के युध्द में मराठाओं और मुस्लिमों के बीच जो युद्ध हुआ इस में मराठाओं की पराजय होने के कारण मराठा सल्तनत का अंकुश इन सरदारों पर से हठ गया बादमें यह सभी सरदार राजा बन गये। समय बदलता गया और बदलते समय के साथ बड़ौदा में गायकवाड शासन स्थापित हुआ।

इन गायकवाड शासकों में से सर्वाधिक सयाजी राव तृतीय के राज में प्रजालक्षी कार्य अधिक हुए। स्वयं सयाजीराव सात भाषाओं के ज्ञाता थे और इन में पाश्चात्य भाषाओं पर उनका प्रभुत्व था। उनका एक ही उद्देश्य था जो भी कार्य करुँ वह कार्य प्रजालक्षी ही हो। सर सयाजीराव तृतीय के कार्य काल में बड़ी इमारते, अस्पताल, महाविद्यालय, न्याय मंदिर, बगीचे इत्यादि का निर्माण हुंआ। केवल प्रजालक्षी कार्य ही करना ऐसे शासक पूरे हिन्दुस्तान कम ही हुए हैं।

---

९२ ईन्टरनेट द्वारा वडोदरा की भौगोलिक स्थिती

1875:- Anglo-Vernacular School Now Music Collage

३-३ महाराजा सयाजीराव स्थापित गायनशाला एवं बड़ौदा स्थित म्युजिक कॉलेज :

बड़ौदा के कुशल राजा स्व. सयाजीराव गायकवाड़ ने भारत वर्ष में कला शिक्षा की नींव डाली। कला शिक्षा का महत्व समझकर उन्होने आजसे १२२ साल पहले भारत की सबसे पहली संगीत पाठशाला की स्थापना ई सन् १८८६ फरवरी महीने में की। खान साहब मौलाबक्ष इस पाठशाला के प्रथम मुख्याध्यापक पद के लिये नियुक्त किये गये। बड़ौदा नगरी की जनताने प्रथम वर्ष में ही इसे बहुत अच्छा प्रतिसाद दिया। प्रथम वर्ष में ही ९० विद्यार्थी संगीत शिक्षा के लिये दाखिल हुऐ । १८८६ के राज्य सरकार के एज्युकेशन रिपोर्ट में भी इस बात की पुष्टि की गयी है। जो प्रतिसाद मिला वह अपेक्षा से कही बेहतर था। संगीत शिक्षा हर साल बढती गयी और हर साल पाठशाला में दाखिल होनेवाले छात्रों की संख्या बढती गयी। संगीत की शिक्षा बिलकुल मुफ्त में दी जाती थी। इतना ही नहीं परन्तु जरुरतमंद विद्यार्थीओं को संगीत शिक्षा के प्रोत्साहन हेतु कई शिष्यवृत्तियाँ दी जाती थी।

शुरुआत के समय में खानसाहब मौलाबक्षजी को नोटेशन स्वरलिपी के प्रश्न का सामना करना पडा। आजतक संगीत शिक्षा, अंगत या गुरु की ओर से शिष्यों को दी जाती थी। समूह में विद्यार्थीओं को सिखाना ओर

प्रगति करना इस पद्धति को ट्यूशन कहा गया। संगीत को लिखना जैसे की संगीत का नोटेशन यानी चीजों को लिपिबध्ध करने का यह प्रथम प्रयास था। और प्रयास करते उन्होंने सरल और योग्य नोटेशन पध्दति का सर्जन किया और नोटेशन के सर्जन का श्रेय उन्हें जाता है। बाद में भातखंडेजी और पलुस्करजी ने उसे परिवर्तित कर एक नया आविष्कार किया।

SRI HANSA MEHTA LIBRARY
THE MAHARAJA SAYAJIRAO UNIVERSITY OF BARODA

इसके बाद सबसे बड़ी समस्या थी गीतो को चुनने का प्रश्न, था स्व मौलाबक्षजी स्वयं धृपद गायक थे और उनपर धृपद धमार की परंपरागत चुस्त चीजों का प्रभाव था। इसलिये वे शृगांररस की चीजों को छात्रो को सिखाने पक्ष में नही थें। उन्होने भक्ति गीतो को नये ढंग से स्वरबध्द कर छात्रों को सिखाने को उचित माना और इसतरह से इस प्रश्न को उन्होनें इस तरह से सुलझाया। यह बहुत ही सही फैसला था। इसमे लोगों के दिल भी जीत लिये क्योंकि समाज कभी ऐसे गीतों को भी मान्यता न देता जिससे बच्चे ऐसे प्रेमसंबधित गीत सीखे या गायें।

खाँ. साहब मौलाबक्षजी दस साल तक सेवारत रहे। उनकी मृत्यु १८८६ साल में हुई। उनके बाद उनके सुपुत्र खान साहब दादुमियाँ उर्फ के एम. मुर्तज़ाखान संगीत पाठशाला के मुख्याध्यापक बन गये और वे १९१९ तक कार्यरत रहे। १९१९ मि केडविस जो राज्य के बँड के मुख्य मँनेजर थे उनको

संगीत शाला का पुनर्गठन करने को कहा गया। संगीत शाला के अध्यक्ष और कलावंत कारखाना के निर्देशक पद पर नियुक्त किये गये। महाराजा सयाजीराव ने संगीत शिक्षा की सुविधा छोटे छोटे कस्बो, गाँव, शहर तक पहुचें इसके लिए भी अथक प्रयास किये। उन्होंनें डभोई, नवसारी, पाटण, महेसाणा, अमरेली इन सभी जगह संगीत पाठशाला स्थापित की थी और ये सभी संगीत शाला बड़ौदा की संगीत शाला से जुडी हुई थी और सभी के मुख्याध्यापक बड़ौदा के ही थे।

भारत के कई नामी संगीतकार संगीतशाला में शिक्षक थे। उनमें खाँ साहब तसासउद्दीन खाँ, फैयाज खाँ, भीखन खाँ, अजीमब्क्ष, करीमब्क्ष, फिदाहुसेंन इत्यादि। फैयाज खाँ १९२६ में पाठशाला के अध्यक्ष बने दो साल के उनके कार्यकाल में अताहुसेन खाँ और निसार हुसेन खाँ इनके साथ शिक्षक के रुप में जुड गये।

प्रसिध्द संगीत तज्ञ पं. भातखंडेजी को महाराजा सयाजीराव ने आमंत्रित किया और संगीत पाठ शाला के विकास की जिम्मेदारी सौपी। पं. भातखंडेजी ने संगीत शिक्षा में कक्षा पद्धति का विकास किया, जो उन्होने अपने समय के नामी संगीतकारों और उनके घरानों से प्राप्त किया। उनके द्वारा रोजबरोज की संगीत शिक्षा के लिये किताबे लिखी। श्री हिरजीभाई डॉक्टर जो बड़ौदा

के रहवासी थे उनको १९२८ में संगीत शाला के मुख्याध्यापक के पद पर नियुक्त किया गया। और वे १९५० तक सेवारत रहे। भातखंडेजी की क्रमिक पद्धतीसे पाठशाला को बहुत ही फायदा हुआ। हिरजी भाई ने इस पद्धति की सफलता और शिक्षा की गुणवत्ता के लिये बहुत प्रयत्न किये।

स्व. महाराजा सयाजीराव स्वप्नद्रष्टा थे शुरुआत से उन्होने अपने राज्य में युनिवर्सिटी स्थापित करने का लक्ष्य रखा था। जिनमें विविध शिक्षा के संकुल हो वर्ष १९४९ में फाईन आर्टस् के साथ संलग्न हो इसके लिये डॉ जिवराज मेहता मुख्यमंत्री थे उनके कार्यकाल के दौरान बड़ौदा युनिवर्सिटी एक्ट मंजूर किया गया। कई समिति द्वारा कड़ी महेनत के बाद युनिवर्सिटी की स्थापना की गई और श्रीमती हंसाबेन मेहता प्रथम वाइसचांसलर उपकुलपति बनी।

महाराजा सयाजीराव युनिवर्सिटी एक्ट के अंर्तगत ३०-४-१९४९ में कॉलेज ऑफ इन्डियन म्युजिक संचालित डिग्री सर्टीफिकेट और डिप्लोमा को युनिवर्सिटी में शामिल किया गया। अगस्त १९४९ में कॉलेज का पुनर्गठन करने हेतु एक कमिटी बिठाई गयी। सिन्डिकेट ने इस समिती को मान्यता देकर अक्टुबर १९४९ से इसका अमल हुआ और उप प्राचार्य के पद का सर्जन किया और तत्काल नियुक्ति भी हो गयी। आगे संगीत रत्न उस्ताद फैयाझ खाँ और

प्रिन्सीपाँल प्राचार्य श्री अेस. अेन. रातराजंनकर को सन्माननीय अध्यापक की हैसियत से अध्यापन और प्रायोगिक प्रदर्शन के लिये आमंत्रित किया गया। बाद में स्नातक वर्ग नयी जगह पर चलाने का तथा पुराने डिप्लोमां वर्ग ये दोने को एक ही प्राचार्य के कार्यक्षेत्र में लाने का तय हुआ। १९५० में नये डिग्री कोर्स को मान्यता दी गयी, नये साज खरीदे गये और नये कर्मचारीगण की नियुक्ति हुई। इस तरह से डिग्री क्लास १६-७-१९५० में कार्यरत हुआ। इसी समय प्रो सधीरकुमार सक्सेनाजी नियुक्त हुऐ।

३०-६१९५३ में कॉलेज का नया नामकरण जो कॉलेज ऑफ इन्डियन म्युजिक डान्स एन्ड ड्रॅमेटिक्स रखा गया। सन १९५० से कॉलेज पूरी तरह से विकसित हुआ था। इसका श्रेय युनिवर्सिटी के अधिकारिओं की दीर्घ दृष्टि और स्पष्ट नीति को जाता है। संगीत विभाग का विस्तार किया गया और साथ में नृत्य विभाग तथा नाट्य विभाग जोड दिये गये। संगीत शिक्षा के कार्यक्रमों को अधिक प्राधान्य देकर उसका सरली करण किया गया।

---

९३ सोवेनिअर १९५२ - महाराजा सयाजीराव युनिवर्सिटी
प्रो. आर. सी. महेता लेख - पंडित शिवकुमार शुक्ल फेलिशिएशन मोमेन्टो १९९२

३-४ म्युजिक कॉलेज में नौकरी क्यों पसंद की ?

बड़ौदा आनेसे पहले सुधीरजी आकाशवाणी पर कार्यरत तो थे ही। साथ ही उस जमाने के सभी श्रेष्ठ कलाकारों के साथ अर्थात चाहे वह गाने का क्षेत्र हो वाद्य क्षेत्र हो अथवा नृत्य क्षेत्र हो सभी कलाकारो के साथ सुधीरजी ने सार्वजनिक कार्यक्रम तथा संगीत संम्मेलनों में बजाया था। तथा एकल वादन के अनेक कार्यक्रम उनके होते थे। अतः देखा जाय तो उस समय के अति प्रसिद्ध तबला वादको में से एक थे। शोधार्थी के साथ इस क्षेत्र में याने बड़ौदा स्थायी होने के बारे में अति महत्व पूर्ण चर्चा क्षेत्र में अत्यंत संवेदन शीलता से उनके अपने विचार शोधार्थी के सामने रखे उनके कहने का गूढार्थ इतना ही था की उस्ताद के पास से सच्ची तालीम लेने के बाद यह तबला सिर्फ कार्यक्रमो में बजाने के लिये ही नही है। कार्यक्रमो में खूब बजाया, उससे आमदनी भी बहुत हुई किंतु यह कितने दिन तक चलेगा। सुधीरजी उस जमाने में अनुस्नातक थे इसी लिये उनका विचार था कि कार्यक्रमो में सिर्फ वाह-वाह ही होती है आखिर हमने इतना तबला क्यों सिखा? इसका क्या फायदा? सिर्फ पैसों की खातिर? जब तक उंगलियाँ चले तबतक, बाद में क्या? यह यक्ष प्रश्न उनके मन में सतत चलता रहता था। इसी लिये उन्होने तय किया कि जो कसम मैने गंडाबंधन के समय उस्ताद को दी थी कि मै यह तबला किसी को नही सिखाउंगा और मन में विचार किया था

कि यह अजराड़ा घराने का तबला पूरे हिन्दूस्तान में सभी को सिखाउंगा। इसी कारणवश एक जगह स्थायी हो कर अपने घराने का तबला शहरों में गाँव,गाँव तक पहुचाउंगा ऐसे उच्चकोटि के विचार साथ लेते हुए एक दिन मौका आया और वह भी गुजरात के बड़ौदा शहर में। शायद कर्मधर्म या संजोग से यहाँ के म्युजिक कॉलेज में व्याख्याता के रुप में उनकी नियुक्ति हुई और तभी से पूरे गुजरात में अजराड़ा घराने का तबला आज दिन तक बजता है। यह गुजरात जैसे राज्य का अहोभाग्य ही समझा जायेगा कि सुधीरजी ने बड़ौदा स्थायी होने का सोचा और गुजरात कें संगीत क्षेत्र में एक तहलका मच गया। जब सुधीरजी व्याख्याता के रुप से महाराजा सयाजीराव युनिर्वसिटी में जुडे। पढ़ाते समय एक बात तो निश्चित थी, नौकरी केवल नौकरी होती है वहा नियमो का पालन करना पड़ता है किंतु सुधीरजी को तब राहत मिलती थी जब सुधीरजी को किसी बड़े कार्यक्रम में बजाने का न्यौता आता था तब उनको छुट्टी मिलती थी, और इस तरह से वह बड़ौदा से बहार के कार्यक्रमों में बजा सकते थे। इस प्रकार वे अपने दोनों उद्देश्यों की पूर्ति कर लेते थे। इस प्रकार उन्होने अपने कॉलेज के कार्य काल में कभी कोई कमी नही दिखाई।[९४]

---

९४ साक्षात्कार प्रो सुधीरकुमार सक्सेनाजी दि १-६-२००७

३-५ नियुक्ति के समय तबला विभाग की स्थिति :

महाराजा सयाजीराव तृतीय ने बड़ोदा नगरी में गायन शाला स्थापित की थी। उस समय कॉलेज नही था। गायन शाला में संगीत सिखाया जाता था। किंतु जब इसका रुपांतर कॉलेज में हुआ तब इसके अंतर्गत अन्य विभाग खुले जिसमें गायन विभाग, वाद्य विभाग, नृत्य विभाग, नाट्य विभाग ऐसे भाग विकसित किये गये और कॉलेज में डिग्री एवं डिप्लोमा जैसे अभ्यास क्रम बनाये गये। डिग्री तीन साल तक और डिप्लोमा पांच साल का रखा गया। जब सुधीरजी व्याख्याता के पद पर नियुक्त हुए तब तबला विभाग में तीन व्याख्याता थे श्री नानासाहेब गुरव, श्री बबनराव रत्नपारखी श्री पात्रावाला ये तीनो पखवाजी थे किंतु एक बात तो महत्वपूर्ण है कि तो पखावज वादक तबला आसानी से बजा सकता है। उसी समय तबला विभाग जो नया- नया शुरु हुआ था उसके कोर्स में मुख्य तालों मे पांच, पांच परने सिखाई जाती थी। तबला बडे मुँह वाले थे, जो अभ्यास क्रम बनाया गया था उसमें अनेक त्रुटीयाँ थी किंतु जब १९५० में सुधीरकुमारजी का आगमन हुआ और उन्होने तबला विभाग की डोर संभाली तब पहला काम उन्होने दिल्ली से तबले की पांच जोड़िया खरीदी, और बाद में तबला विभाग का कोर्स नये ढंग से से बनाया और साथोसाथ थियरी कोर्स भी बनाया गया। डिग्री कोर्स के लिये

अलग कोर्स था और डिप्लोमा कोर्स के लिये अलग ये दोनो कोर्स युनिर्वसिटी से मान्य करवा लिये। इसी तरह से तबला विभाग शुरु हुआ और आज तक उसी तरह से चला आ रहा है और कोई भी परिवर्तन इस में हुआ नहीं हैं। इस पर गम्भीरता पूर्वक विचार किया जाये तो एक विलक्षण बुद्धीवादी व्याख्याता इस विश्वविद्यालय को मिला। साथसाथ यह भी एक इच्छा थी की प्रत्येक छात्र इस तरह से सीखे की वो सिर्फ तबले में माहिर न हो किंतु वह इतना निपुण हो की अष्टपहलु मे उसकी गणना हो। अर्थात बजाने के अलावा उसे अपने विषय का सौंदर्य कैसा हो और वो लोगों के सामने कैसे पेश करे उसका ज्ञान भी उसे मिलना ही चाहिये इसपर सर विशेष ध्यान देते थे। साथ साथ इग्लिश, फिजिक्स और तबला विषयक थियरी तो बनायी हुई थी। याने सर की इच्छानुसार हरेक तबला वादक छात्र सही मायने मे कलाकार बने।

३-५-१ तबला विभाग में सुधीरजी विद्यार्थीओं को शिक्षा किस प्रकारसे देते थे।

सुधीरजी हर बार एक ही बात पर जादा जोर देते थे कि कोई भी तबले का बोल तबले पर बजाने से पहले उसकी पढ़न करना अत्यावश्यक है। क्योंकि जिसकी पढ़न शुध्ध हो वो ही तबला साफ सुथरा बजा सकता है। इसलिये सुधीरजी विद्यार्थीओं को नोटेशन कर के बच्चों को देते थे। तबला

वादन में कायदा उसके पलटे, गत, टुकडा, रेला, चक्रधार इत्यादि का गहन पूर्वक अध्ययन विद्यार्थीगिण को सिखाते और वह कौनसी जाति का है उसमें क्याक्या खूबियाँ होती हैं उसका विवरण वह सिखाते और बच्चो के पास से वादन करा लेते। सर कहते थे की जिसको नोटेशन (लीपीबध्दता) समझ में आई वह विद्यार्थी आसानीसे तबले के नये बोल नये विचारों से बना सकता है। सर कहते थे की तबला पूरा गणित आधारित होता है। इस अभ्यास के बाद जो भी कायदा हो उसका निकास किस तरह से करना है इसका अभ्यास सुधीरजी कर लेते। तबला बजाते समय स्पष्ट रुप से बजना चाहिये उसपर जादा जोर देते थे। इसके अलावा सर का यह भी कहना होता था की हरेक विद्यार्थी साथ-संगत में माहिर हो याने गायन, वादन, नृत्य के साथ संगत करना अत्यावश्यक है। तबले के बारे में गुरुजी सौंदर्य शास्त्र पर भी जोर देते। उनका कहना यह था की हरेक की प्रकृतीनुसार तबला बज पायेगा याने उस कलाकार के वादन पर उसकी असर दिखाई देगी। शाँत स्वभाव का कलाकार गाने के साथ अच्छी संगति कर सकता है। चंचल स्वभाव का कलाकार प्रकृतिनुसार ज्यादातर वाद्य तथा नृत्य के साथ बजा सकता है। ऐसा सभी के साथ नहीं होता है। जो भी कार्य करो वह श्रद्धापूर्वक करो यही उनकी सीख थी।गुरुजी पहले से ही विद्यार्थी को जान जाते थे कि विद्यार्थी

श्री. अकोलकर, नागपुर, श्री. दिरपोल, मोरेशीअस

श्री थेअरीन जान, जपान, श्री खोपकर, मुंबई शिष्यो के साथ प्रो सक्सेनाजी

की प्रकृति क्या है? किस तरह से आगे बढ़ेगा, उसी समय वह विद्यार्थी को कहते की आप गाने के साथ बजाओ, दूसरे को कहते आप नृत्य के साथ बजाओ, तीसरे को कहते आप वाद्य के साथ बजाओ, बाद में उनका वादन सुनते और उस विद्यार्थी को किस प्रकार से साथ संगत करनी है उसका ज्ञान देते। इस प्रकार से गुजीरु आने के बाद पूरे कॉलेज में तबला विभाग में नयी सी जान आ गयी और धीरे धीरे विद्यार्थी गण सीखने के लिये कॉलेज में दाखिल होने लगे। इस तरह से सुधीरजी ने अभ्यास क्रम में नयी जान डाली।

३-५-२ कॉलेज को अनोखी सिध्धि प्राप्त हुई ।

कॉलेज में विद्यार्थिओं को सिखाते सिखाते सुधीरकुमारजी बहार के कार्यक्रमों में बजाने जाते। थोडे ही दिनो में ऑल इंडिया रेडियो ने उनको ए टॉप क्लास कलाकार का खिताब एनायत किया और वह भी बिना ऑडीशन दे कर। ऐसा बहुत कम कलाकारों के साथ हुआ है और इस प्रकार सुधीरजी आकाशवाणी के मान्य कलाकार हो गये। इससे पूरे हिन्दुस्तान के म्युजीक कॉलेजो में महाराजा सयाजीराव युनिवर्सिटी का नाम रोशन हुआ। साथ ही पूरे गुजरात में सुधीरजी को अधिक प्रसिध्दि प्राप्त हुई।

---

९५ साक्षात्कार प्रो सुधीरकुमार सक्सेनाजी दि १५-६-२००७, २१-६-२०७

३-६ विश्व विद्यालय में विभिन्न विभागों में रुचि :

प्रो .सुधीरकुमार सक्सेनाजी का १९५० में बडौदा स्थित महाराजा सयाजीराव युनिर्वसिटि के कॉलेज ऑफ इन्डियन डान्स एन्ड ड्रॅमेटिक्स के अंतर्गत वाद्य के अधिकारी के रुप में नियुक्ति होने के बाद आपने केवल तबला विभाग में रुचि न रखते हुए अन्य विभागों में भी ध्यान दिया, यह करने की आवश्यकता इसलिये मेहसूस हुई क्योंकि दूसरे विभागो में प्रतिभावान एवं नामी कलाकार नही थे। इसलिये स्वयं अन्य विभागों में रुचि दिखाते हुए अपने ही मित्र थे,सभी हिन्दुस्तान के प्रसिद्ध कलाकार थे ऐसे महानुभावों को उपकुलपति से कहकर अन्य विभागों में नौकरी दिलवाई। फलतः संस्थाकी स्थिति सुधरने लगी अर्थात न केवल तबला विभाग सक्षम कार्य करता था बल्कि अन्य विभाग भी उतने ही प्रतिष्ठित माने गये, सुधीरकुमारजी से साक्षात्कार करने के बाद उनसे जो जानकारी मुझे प्राप्त हुई उसी आधारपर इस शोध ग्रंथ में देने का प्रयास किया गया है। प्रो सुधीरकुमारजी से वार्तालाप करते समय जिन नामों की पुष्टि की गयी उन को संग्रहित करके इस शोध ग्रंथ में देने का प्रयास किया गया है। उदाहरण के रुप में संगीत रसराज पं.शिवकुमार शुक्ल जो भिंडीबजार घराने के नामवंत कलाकार थे, पं.भरतजी व्यास जो धृपदिये थे तबला विभाग में पं.गणपतराव

घोडके, पं. मदनलाल गांगाणी, नृत्य विभाग में पं. सुन्दरलाल गांगाणी, पं. किशनलाल पुष्कर, भरतनाट्यम् विभाग में अंजलीबहन मेढ, सितार विभाग में उस्ताद अनवर खाँ, तथा उनके भाई उस्ताद सरवर खाँ तथा अन्य दिग्गज कलाकारों को बुलाकर संस्थाकी गरिमा उच्च स्थान पर ले जाने में प्रो. सुधीरकुमारजी का बहुमुल्य योगदान रहा है इस में कोई संदेह नही है। इसी विश्वविद्यालय के आचार्य पद्मभूषण प्रो. आर. सी मेहता द्वारा भी इसकी पुष्टि की गयी है। शोधार्थी का कहना इतनाही है की इस विश्वविद्यालय की उपकुलपति हंसाबेन मेहता यदि इस महान विभूति को न लाती तो आजका कालेज देश, विदेशो में प्रसिध्ध होता? शोधार्थी का गहन अध्ययन करने के बाद उसे ऐसा अनुभव हुआ कि प्रो. सुधीरकुमारजी के आने से ही केवल अजराड़ा घराने की स्थिति सुधरी ऐसा नही परंतु कॉलेज की प्रसिद्धि में भी चार चाँद लग गये।

३-७ प्रो. सुधीरकुमार सकसेनाजी का बड़ोदा शहर में निवास :

बड़ोदा आने से पहले सर का निवास दिल्ली में था। सुधीरजी तब आकाशवाणी दिल्ली केन्द्र पर रेडियो कलाकार की हैसियत से नौकरी करते थे। किंतु जब श्रीमती हंसाबेन मेहता जो महाराजा सयाजीराव युनिर्वसिटी की

वाइस चांसलर थी और उन्होंने सुधीरकुमारजी को बड़ौदा आने का न्यौता दिया तो सुधीरजी ने उन्हे अपनी सहमति दी। अपने मित्र श्री राघव को यह बात बतायी की में बड़ौदा स्थाई हो रहा हुं। श्री राघव ने कहा कि मेरी मौसी की लड़की बड़ौदा में रहती है उन्होंने उनके नाम पर एक चिठ्ठी लिखकर दी उनका नाम उर्मीला क्षत्रीय था। जो नाट्य क्षेत्र के मार्तंड भट की धर्म पत्नी थी और गुजराती फिल्म अभिनय क्षेत्र से जुड़ी हुई थी। उनके यहाँ सर करीब ६ महिने तक रहे उसके बाद सर ने सयाजीगंज विस्तार में जगदीश लॉज में दो कमरे किराये पर लिये। यहाँ सर ३ साल तक रहे। शुरुआत में सर को खाना खाने के लिये दिक्कत उठानी पडती क्योंकि बड़ौदा में गुजराती भोजन मिलता था जो मुंगफली के तेल में बनता था और सर का खाना शुध्द घी में चाहिए था। एक बार म्युजिक कॉलेज के कॅन्टीन चालक के साथ रिसेस में खाने की बातचीत चल रही थी तब सर ने अपनी खाने की दिक्कत स्टाफ मित्रों को सुनायी तब कॅटीन चालक ने यह बात सुनी तब उसने सर से कहा कि बस डिपो पर मेरी हॉटेल "कॅफे डी रेक्स" में आपको जिस तरह का खाना चाहिये वह मिलेगा। और वहाँ सर को शुध्द घी में बनाया हुआ खाना मिलने लगा। १९५४ में सर ने अपना निवास्तान बदला और वह पोलो ग्राउन्ड के पास माने पाटिल साहब जो क्लेक्टर थे

उनके बंगले के सामने विश्वास बिल्डिंग में रहने आ गये। और अपनी आखरी साँस तक वह यहाँ रहे।

१९५४ में प्रज्ञा छाया नामक छात्रा थी वह जाति से गुजराती नागर ब्राम्हण थी उनके परिचय में आये। जो म्युजिक कॉलेज में गायन विभाग में पढ़ती थी। परिचय आगे प्रेम मे बदला और दोनो के परिवार पक्ष की ओर से अनुमति मिलने पर उनके आशिर्वाद से २८-४-१९५६ को आर्यसमाज में शादी हुई। उनकी धर्म पत्नि भी आर्टीस्ट थी और सुगम संगीत में माहिर थी और साथोसाथ आकाशवाणी की बी+ आर्टिस्ट थी।

५-१०-१९६१ में उनको कन्या रत्न हुआ जिसका नाम हिना रखा गया जो क्लिनिकल सायकॉलॉजी में डॉक्टरेट है। और अहमदाबाद में रहती है। १९७० में दुसरी कन्या ने जन्म लिया उसका नाम अर्चना रखा। और उसने भी उच्च शिक्षण हासिल किया और अभी कॅनाडा में स्थित है। तबले के अलावा सर को अन्य क्षेत्र में भी काफी रुचि थी। जैसे कि उनको पहनने कलफ़ लगे हुए तथा इस्त्री किये कपड़े पहनते थे, उनको चप्पलों का बहुत शोख़ था नये-नये डिजाइन वाले चप्पल बहुत पसन्द थे,उनका रुमाल भी कडक इस्त्रीवाला होता था। इसके साथ इत्र का शोख़ भी था जो सर रोज कॉलेज में लगाकर पढाने आते थे। कहने का मतलब यह है की सर ने ना

कभी अपने में ढिलाई रखी न ही खाने पीने में। इस सब के बावजूद उनको सादगी पसंद थी।

३-७-१ तबले के अलावा शिष्यो को सचोट मार्ग दर्शन :

तबला क्षेत्र के क्रियापक्ष और शास्त्र पक्ष में अति माहिर ऐसे सर का अन्य क्षेत्र में भी बड़ा योगदान रहा है। सुधीरजी कहते थे उनको खेलकुद में भी दिलचस्पी थी और कॉलेज काल में सर टेबल टेनिस, कैरम जैसी इन्डोर गेम भी खेलते थे साथ में कॉलेज की ओर से हॉकी खेलते थे। इसके अलावा सर को क्रिकेट मैच देखने का भी बडा शोख़ था। सर को पढ़ने का भी बडा शोख़ था। हररोज टाईम्स ऑफ इडिंया तथा स्थानिक पेपर भी रोज पढ़ते उनका यह नित्यक्रम था। इस लिये सर हरेक विद्यार्थी के साथ अन्य विषयों की बातचीत में रुचि रखते थे। चाहे विषय कोई भी हो पोलिटिक्स हो या खेलकूद का हो सर उस विषय पर सचोट मार्गदर्शन देते थे। सर पढ़ने के अलावा उच्चारण के लिये बहुत आग्रही थे। सर कहते थे की तबले में जिसकी पढ़न अच्छी उसका तबला वादन भी अच्छा। सर हमेशा कहते थे कि कभी किसीको कम मत समझो। जो जिस प्रकार का हो उसे सन्मान दो, संगीत विषय पर चर्चा करते समय सर मुख्य कलाकार की झाँकी बिगड़ ने मत दो क्योंकी कार्यक्रम का म्युख्य कलाकार होता है और हम उसके

संगतकार होते हैं। जब भी मौका मिले तब थोड़े में अपनी प्रतिभा का अस्तित्व दिखाकर योग्य स्थानपर वापिस आ जाना। इसके लिये पूर्व तैयारी, सज्जता, तथा रियाज़ कलाकार के लिये कितना महत्व का होता है उसे सर उदाहरण दे कर समझाते थे। सर का एक विलक्षण स्वभाव या सद्‌गुण कहिए जो उनके जीवन के आचरण में उन्हों ने आत्मसात किया था। और जो उनके व्यवहार से स्पष्ट होता था, सर विद्यार्थीओं को कहते थे जीवन में धीरज़ और संयम होने अत्यावश्यक है। इसलियए सर पतंग का उदाहरण देते थे, वह कहते थे कि जिस प्रकार से आकाश में ठुमका मारकर पतंग को उड़ाया जाता है जबतक उसे कोई पेच लगाकर काटे नही तब तक उसे ढील देकर आकाश में खुब ऊँचेतक उडाया जा सकता है और उसे स्थिर करने के बाद में दूसरी पतंग का भय नहीं रहता है। उसी तरह जीवन में यही अनुशासन काम करता है। व्यवहार में सौम्यता रखो, कोई खीचतान नही बस काम करके आगे निकलो, काम के वजन से competition face करो Your work should speak never restart to unhealthy tacties or cheap publicity. समाचार पत्रों में प्रशंसा नही आती तो क्या फरक पडता है? अपने काम में प्रामाणिकता हो तो लोग सामने से बुलाऐगें इस तरह से सर सफलता और प्रामाणिक होने का रहस्य बताते थे।

---

९६ साक्षात्कार प्रो सुधीरकुमार सक्सेनाजी दि २८-६-२००७, ३०-६-२००७

३-८ १९७९ में रीडर एवं प्रोफेसर पद पर नियुक्ति।

सन १९५० से लेकर १९७९ तक प्रो. सुधीरकुमार सक्सेंनाजी ने एक शिक्षण संस्था में मान सन्मान तो प्राप्त किया परंतु साथ,साथ पद भी प्राप्त किया इसकी पुष्टि के रुप में सन १९७९ रीडर पद पर आपकी नियुक्ति हुई।

प्रो. सुधीरकुमारजी केवल अपने रीडर पद पर ही संतुष्ट नही थे,बल्कि इस के बाद सन १९८१ में आपको मान सन्मान प्राप्त हुआ इसकी पुष्टि करने के लिये नियुक्ति पत्र संलग्न है।

३-८-१ १९८३ में निवृत्ति :

३३ साल की प्रदीर्घ सेवा करने के बाद आप सन् १९८३ में नियमों के अनुसार निवृत्त हुए। कॉलेज द्वारा एक कार्यक्रम रखा गया जिसमें प्रो. सुधीरजी द्वारा स्वतंत्र तबला वादन का कार्यक्रम पेश किया गया। इस संगीतमय सभा वादन मे न केवल संस्था के सभी कर्मचारी गण ने भाग लिया अपितु अधिक संख्या में शिष्य भी सम्मिलित हुए। सुधीरजी ने निवृत्ति के समय छात्रो को मार्गदर्शन रुपी भाषण दिया की उस समय सभी कर्मचारी गण छात्र उन सभी के माता पिता इतने भावविभोर हो गये थे की उनकी आखों में पानी आगया। सुधीरजी ने छात्रो को इस तरह से समझाया की जिंदगी जीओ तो जिंदादिली

से, जीवन में कभी पीछे मत हठना सिर्फ काम करते जाओ सफलता आपने आप से मिलेगी। शोधार्थी उस समय वहाँ पर उपस्थित था। यदि इसकी पुष्टि की जाय तो निवृत्ती समय के छायाचित्र एवं आपने बजाया हुआ कार्यक्रम की सीडी उपलब्ध है।

३-८-२ १९८७ में फॅकल्टी ऑफ परफॉरमींग आॅर्टस् में परिवर्तन :

१२७ साल पुरानी इस संस्था का नामकरण तीन बार बदला गया प्रारंभ में यह संस्था एक गायन शाला के रुप में बड़ौदा स्थित मध्यवर्ती शाला में चलती थी किंतु महाराजा सयाजीराव गायकवाड़ द्वारा इसे सुरसागर तालाब है उसके सामने १८७५ एंग्लो वरनॅक्युलर स्कुल था उस वास्तु में स्थलांतर किया जो आज भी कार्यरत है तब उसका नामकरण कॉलेज ऑफ इन्डीयन म्युजीक डान्स अॅन्ड ड्रॅमेटिक्स् रखा गया जो फाइन आर्टस् के अतंर्गत थी। इस बाद १९८७ में नाट्य विभाग के अध्यक्ष प्रो.मार्तंड भट के कार्य काल में इस फॅकल्टी का अपना नया नामकरण किया गया जिस में अपनी खुद की एक नयी पहचान बनी आज यह फॅकल्टी आफ परफॉरमींग आटर्स् केन नाम से जाना जाता है।

---

१७ साक्षात्कार प्रो सुधीरकुमार सक्सेनाजी दि ४-७-२००७, १५-७-२००७

યુવક સેવા અને સાંસ્કૃતિક પ્રવૃત્તિ વિભાગની
ગુજરાત સંગીત નૃત્ય નાટ્ય અકાદમી યોજિત

ગૌરવ પુરસ્કાર પ્રદાન સમારંભ

સ્મરણિકા

પુરસ્કાર પ્રદાન : **શ્રી સનતભાઈ મહેતા**, નાણામંત્રી, ગુજરાત રાજ્ય

પ્રમુખસ્થાન : **શ્રી મનોહરસિંહજી જાડેજા**, અધ્યક્ષ, ગુજરાત સંગીત નાટ્ય અકાદમી અને મંત્રી સાંસ્કૃતિક પ્રવૃત્તિઓ, ગુજરાત રાજ્ય

તા. ૩૦ માર્ચ, ૧૯૮૪ રાત્રે ૮-૩૦ વાગ્યે ટાઉન હોલ, ગાંધીનગર

સંપાદન : **ડૉ. મહેશ ચોકસી, શ્રી એસ. એમ. સાકરેચા**

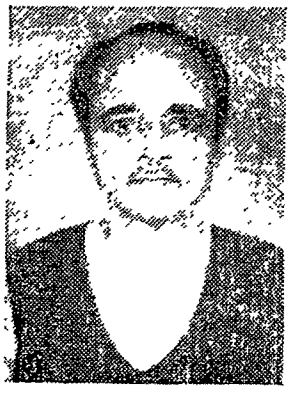

શ્રી સુધીરકુમાર સકસેના

૫ જુલાઇ, ૧૯૨૩ના રોજ અલીગઢ ખાતે જન્મેલા શ્રી સુધીરકુમારે દશ વર્ષની શૈશવ વયે જ મીરતના અજરાડા ઘરાનાના સદ્‌ગત શ્રી હબીબુદ્‌દીન ખાન પાસે તાલીમ લેવાનો પ્રારંભ કર્યો. ૧૯૪૪માં મીરત યુનિવર્સિટીમાંથી અંગ્રેજી સાહિત્યનો વિષય લઈ સ્નાતકની પદવી મેળવી. ૧૯૫૦માં વડોદરાની મ. સ. યુનિવર્સિટી હેઠળની કોલેજ ઓફ ઈન્ડિયન મ્યુઝિક, ડાન્સ એન્ડ ડ્રામેટિકસમાં તબલાના અધ્યાપક તરીકે શિક્ષણ કાર્યનો પ્રારંભ કર્યો. એ સંસ્થામાં સંગીત વિભાગના વડા અને પ્રાધ્યાપક તરીકે કીંમતી સેવાઓ આપી નિવૃત્ત થયા છે. આ અગાઉ ૧૯૪૫ થી ૧૯૪૮ સુધી આકાશવાણીના કલકત્તા કેન્દ્ર પર સ્ટાફ આર્ટિસ્ટ તરીકે સેવા આપી.

કલાકાર તરીકે સમગ્ર દેશમાં અખિલ ભારતીય સંગીત પરિષદોમાં સંખ્યાબંધ કાર્યક્રમો આપ્યા છે. છેલ્લાં ૨૪ વર્ષથી આકાશવાણી પરથી ઉચ્ચ કોટિના કલાકાર તરીકે કાર્યક્રમ આપતા રહયા છે. આકાશવાણીના કંઠ-પરીક્ષા (ઓડિશન) બોર્ડના સભ્ય હોવા ઉપરાંત, એ જ સંસ્થા માટે યુવાન પ્રતિભાની પસંદગી સમિતિના સભ્ય અને અધ્યક્ષ રહયા છે. આ ઉપરાંત પી. એચ. ડી. ના વિદ્યાર્થીઓ માટે પરીક્ષક અને માર્ગદર્શક તરીકે મૂલ્યવાન વિદ્યાકીય કાર્ય સંભાળી રહયા છે. વળી દેશની લગભગ તમામ સંગીત વિદ્યાપીઠોમાં અનુસ્નાતક કક્ષાની પરીક્ષાઓ માટે પ્રાધ્યાપક તેમજ પરીક્ષક તરીકે નિયમિત જ્ઞાનલાભ આપે છે. **તબલાવાદનની કલા, તબલાવાદનના અજરાડા ઘરાના, એસ્થેટિકસ ઓફ રિધમ** વગેરે પુસ્તકોમાં સ્વતંત્ર રીતે કે સહયોગ રૂપે હિસ્સેદારી નોંધાવી છે. યુનિવર્સિટી ગ્રાન્ટસ કમિશનની મુલાકાતી સમિતિના સભ્યપદે રહયા છે. ૧૯૬૨માં ભારત સરકારના સાંસ્કૃતિક પ્રતિનિધિમંડળના સભ્ય તરીકે વ્યાખ્યાન-નિદર્શન માટે રશિયા, અફઘાનિસ્તાન તથા જ્યોર્જિયાની મુલાકાત લીધી હતી. તેમની નિષ્ણાત તાલીમ પામેલા અનેક તબલાવાદકો સફળ કલાકારો તરીકે ગુજરાતના જ નહીં દેશ સમગ્રના કલાજગતની સેવા કરી રહયા છે.